दबाव समूह के लक्षण

दबाव समूह के संबंध में परिभाषा के आधार पर निम्नलिखित लक्षण बताएं जा सकते :-

1. **सीमित उद्देश्य:-** दबाव समूह के एक या विशेष कुछ निश्चित लक्ष्य होते हैं और दबाव समूह के द्वारा अपनी गतिविधियां सामान्यता इस विशेष लक्ष्य तक सीमित रखी जाती है।
2. **औपचारिक या अनौपचारिक रूप में संगठित:-** दबाव समूह के लिए राजनीतिक दल के समान औपचारिक रूप में संगठित होना आवश्यक नहीं है, यह अर्ध औपचारिक रूप में संगठित हो सकते हैं या पूर्णतया अनौपचारिक संगठन भी हो सकते हैं ,जिन्हें सामान्य व्यक्ति और संगठित कहते हैं। उदाहरण के लिए ,भारत की वर्तमान राजनीति में अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस एक औपचारिक रूप में संगठित दबाव समूह और जाति से एक बहुत अधिक शक्तिशाली ,लेकिन अनौपचारिक दबाव समूह है।
3. **सीमित एवं परस्पर व्यापी सदस्यता** :-दबाव समूह का समानता वर्गीय हितों से संबंध होता है, और स्वाभाविक रूप से इनकी सदस्यता सीमित होती है। अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस की सदस्यता मात्र श्रमिक वर्ग को और वाणिज्य मंडल की सदस्यता मात्र व्यापारिक वर्ग को ही प्राप्त रहती है।

दबाव समूह की सदस्यता परस्पर व्यापी भी होती है। एक व्यक्ति एक ही समय पर अनेक दबाव समूह का सदस्य हो सकता है ।उदाहरण के लिए ,वह जातिगत समूह, उपभोक्ता समूहों, मोहल्ला संघ और शिक्षक संघ या श्रमिक संघ का सदस्य हो सकता है।

4. **संवैधानिक और असंवैधानिक साधनों का प्रयोग:-** विशेष हितों की पूर्ति ही सबसे प्रमुख लक्ष्य होने के कारण दबाव समूह के द्वारा आवश्यकता अनुसार

Scanned with CamScanner

उचित और अनुचित संवैधानिक और असंवैधानिक सभी प्रकार के साधनों का प्रयोग किया जाता है

5. **राजनीति और प्रशासन में परोक्ष** :- दबाव समूह का शासन पर अधिकार स्थापित करने का कोई लक्ष्य नहीं होता है इसलिए वे राजनीति और प्रशासन में प्रत्यक्ष भूमिका नहीं निभाते हैं इस आधार पर कई बार यह समूह अपने आप को गैर राजनीतिक और गैर सरकारी संगठन बताते हैं लेकिन वस्तुतः दबाव समूह राजनीति और प्रशासन से अलग नहीं होते हैं यह पर्दे के पीछे रहकर राजनीति राजनीतिक निर्णयों प्रशासन कार्यों को प्रभावित करने की निरंतर चेष्टा करते हैं यह समूह चुनाव नहीं लड़ते हैं और ना ही चुनाव में औपचारिक रूप में उम्मीदवार खड़ा करते हैं किंतु वे दलों द्वारा चुनाव में उम्मीदवारों के नामांकन को प्रभावित करते हैं तथा अपने हितों के उम्मीदवारों का समर्थन करते हैं समर्थन धनराशि देकर या अन्य प्रकार से सहयोग देकर करते हैं यह विधायक नहीं बनना चाहते हैं परंतु विधायक के मतों को प्रभावित करते हैं वेब शासन से बाहर रहकर प्रशासनिक अधिकारियों के निर्णय को प्रभावित करते रहते हैं अपने हितों की रक्षा के लिए कभी तो उनके द्वारा निश्चित राजनीतिक वफादारी और कभी और स्थिर राजनीतिक वफा जाई हो का आश्रय लिया जाता है इस प्रकार दबाव समूह राजनीति और गैर राजनीति इन दो स्थितियों के मध्य में स्थित होते हैं 3X टीम के अनुसार दबाव समूह की राजनीति गतिविधियों के आधार पर उनका रूप पूर्णतया और राजनीति कृत समूह से कम तथा पूर्णतया राजनीति कृत समूह से अधिक होता है यह स्थिति वस्तुतः राजनीति और और राजनीति अस्त्रों के बीच की वित्तीय गतिविधियों की होती है। **प्रोफेसर जोहरी के अनुसार** दबाव समूह राजनीति के साथ लुक्का चुप्पी लुका छुपी का खेल खेलते हैं वे राजनीति में है भी और नहीं भी वस्तुतः दबाव समूह समूह की राजनीति स्थिति की बात मात्र सैद्धांतिक और सही

Scanned with CamScanner

स्थिति ही है। व्यवहार में दबाव समूह राजनीति क्रिया अभिमुख ही ही होते हैं दबाव समूह बिना उत्तर दायित्व वान किए सत्ता के संघर्ष और सत्ता के लाभो के लिए सचेत रहते हैं इस कारण कुछ आलोचकों द्वारा इन्हें अन उत्तरदाई राजनीतिक दल भी कहा गया है।

6. **अनिश्चित कार्यकाल:-** दबाव समूह बनते और समाप्त होते रहते हैं किसी एक विशेष की पूर्ति के लिए अस्तित्व में आने के कारण हित की पूर्ति के साथ ही इनका समाप्त हो जाना स्वाभाविक है। इसके अतिरिक्त राजनीतिक समाज की प्रकृति परिवर्तनशील होती है अतः एक विशेष दबाव समूह की स्थापना के कुछ समय बाद अनुपयोगी समझकर भांग भी किया जा सकता है।
7. **सर्व व्यापक प्रकृति** :-दबाव समूह सब उसी प्रकार की राजनीतिक व्यवस्था में पाए जाते हैं। यहां तक कि सर्वाधिकार वादी और स्वेच्छाचारी राज व्यवस्थाओं में भी दबाव समूह होते हैं इनकी सर व्यापकता को स्वीकार करते हुए रॉबर्ट सी बोन लिखते हैं कि, दबाव समूह सभी राजनीति व्यवस्थाओं में यहां तक कि सर्वाधिकार वादी राज्यों में भी पाए जाते हैं। केवल यह तथ्य की दवा व समूह साम्यवादी राज्यों में भी होते हैं इनकी सर्व यादव व्यापकता का प्रमाण है।

दबाव समूहों का स्वरूप किसी देश विशेष की सामाजिक और राजनीतिक विकास की स्थिति के अनुसार परिवर्तित होता रहता है इनके विकास का क्रम होता है और जीवन समाज और अविकसित अवस्था से विकसित अवस्था की ओर बढ़ता है क्यों क्यों सामाजिक या सांप्रदायिक समूह की तुलना में संघात्मक समूहों का विस्तार बढ़ता जाता है।

Scanned with CamScanner